

की कल्पना करने वाला 3. आदर्शवादी बातों घटनाओं/योजनाओं की कल्पना करने वाला।

**स्वप्नतंद्रिता स्त्री.** (तत्.) स्वप्न से या निद्रा से उत्पन्न शिथिलता।

**स्वप्नदोष पुं.** (तत्.) निद्रावस्था में शृंगारिक स्वप्न देखने पर वीर्यपात होना, जो एक प्रकार का रोग है।

**स्वप्नप्रपंच पुं.** (तत्.) 1. स्वप्न के साथ मिथ्या संसार 2. स्वप्न में दिखने वाला संसार, स्वप्न जगत।

**स्वप्नलब्ध वि.** (तत्.) 1. स्वप्न में प्राप्त, सपने में पाया हुआ 2. स्वप्न में देखा हुआ 3. कल्पना में प्राप्त।

**स्वप्न विचार पुं.** (तत्.) स्वप्न के शुभ-अशुभ फल का विचार।

**स्वप्नविचारी वि.** (तत्.) स्वप्न के संबंध में विचार करने वाला पुं. स्वप्नशास्त्री।

**स्वप्न विश्लेषण पुं.** (तत्.) स्वप्न का शुभाशुभ दृष्टि से विवेचन।

**स्वप्न व्याख्या पुं.** (तत्.) 1. देखे गए स्वप्न का विवेचन 2. स्वप्न के विविध रूपों की समय आदि की दृष्टि से विवेचना।

**स्वप्नशास्त्र पुं.** (तत्.) वह विशिष्ट ग्रंथ जिसमें स्वप्न संबंधी समस्त ज्ञान ठीक क्रम से संग्रहीत और विश्लेषित किया गया हो।

**स्वप्नशास्त्री पुं.** (तत्.) 1. स्वप्न का शुभाशुभ विचार करने वाला 2. स्वप्नशास्त्र का विशिष्ट विद्वान।

**स्वप्नशील वि.** (तत्.) निद्रालु, ऊँघासा।

**स्वप्नसृष्टि स्त्री.** (तत्.) स्वप्न की संरचना, स्वप्न का निर्माण।

**स्वप्नस्थ वि.** (तत्.) स्वप्न देखता हुआ, स्वप्न में लीन।

**स्वप्नस्थान पुं.** (तत्.) शयन करने का स्थान, शयनागार।

**स्वप्नांत पुं.** (तत्.) 1. निद्रा या स्वप्न की अवस्था 2. स्वप्न का अंत।

**स्वप्नांतिक पुं.** (तत्.) स्वप्न कालिक विशेष चेतना।

**स्वप्नादेश पुं.** (तत्.) स्वप्न में दिया आदेश, स्वप्न का दिया हुआ आदेश।

**स्वप्नाना स.क्रि.** (तत्.) 1. स्वप्न दिखाना 2. स्वप्न में आना और निर्देश देना।

**स्वप्नालु वि.** (तत्.) जिसे नींद आ रही हो, निद्रालु

**स्वप्नालोक पुं.** (तत्.) 1. स्वप्नों का संसार, स्वप्न जगत 2. कल्पनाओं का संसार, कल्पना जगत 3. ऐसे समाज की कल्पना, जो उत्तम आदर्शों पर आधारित हो और जिसके सदस्यों की जीवन-पद्धति और सामाजिक उद्देश्यों में पूर्ण सामंजस्य हो, आदर्शलोक।

**स्वप्नावस्था स्त्री.** (तत्.) 1. वह अवस्था जिसमें स्वप्न दिखाई देता है 2. शयन करने की वेला 3. लाक्ष. सांसारिक जीवन की अवस्था, जो स्वप्न के समान अवास्तविक एवं निस्सार मानी गई है।

**स्वप्नोपम वि.** (तत्.) जो स्वप्नवत् हो, जो स्वप्न के समान हो, स्वप्न तुल्य।

**स्वप्रकाश वि.** (तत्.) 1. जिसका स्वयं का प्रकाश हो 2. जो स्वयं के प्रकाश से युक्त हो।

**स्वप्रमितिक वि.** (तत्.) जो बिना किसी की सहायता लिए अपना काम स्वयं करता हो अर्थात् जैसे सूर्य स्व प्रकाश से प्रकाशमान है।

**स्वप्राण पुं.** (तत्.) अपने प्राण, अपनी जान, अपना जीवन।

**स्वबरन पुं.** (तद्.) सुवर्ण, सोना।

**स्वबस वि.** (तद्.) जो अपने वश में हो, अपने अधिकार में हो पुं. अपना वश या अधिकार/नियंत्रण।

**स्वबीज पुं.** (तद्.) जो अपना बीज या कारण आप ही हो।

**स्वभाउ पुं.** (तद्.) स्वभाव।